मंगल–मूरति स्तुति

मंगल-मूरति मारुत-नंदन ।

सकल-अमंगल-मूल-निकंदन ।।

पवनतनय संतन-हितकारी ।

हृदय बिराजत अवध-बिहारी ।।

मातु-पिता, गुरु, गनपति, सारद ।

सिवा-समेत संभु, सुक, नारद ।।

चरन बंदि बिनवौं सब काहू ।

देहु रामपद-नेह-निबाहू ।।

जै जै जै हनुमान गुंसाईं ।

कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।

बंदौं राम-लखन-बैदेही ।

जे तुलसीके परम सनेही ।।